R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 26वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 26 | अंक 2 | रविवार, इलाहाबाद, 31 मई 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

जीवन का सार है कविता,
जीवन का उद्धार है कविता ।
कविता से बातें बनती हैं ,
सब कुछ का उद्गार है कविता ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की । लगातार निकलने वाली महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में कुछ गद्य रचनाओं का भी समीश्रण हो रहा है। इस बार प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' पर केंद्रित कई रचनाएं हैं, जो सारगर्भित है। इसे पढ़ें और बताएं कि रचनाकारों ने दिनकर जी की काव्य प्रतिभा को कहां तक महसूस कर लिपिबद्ध किया है । इस विशेषांक से कुछ बानगी - पहली बानगी

धीरे-धीरे आँगन में धूप ने, अपने पाँव पसारे हैं,
गर्मी की दस्तक है देखो, बदले अब नज़ारे हैं।

दूसरी बानगी

गर्मी में पसीने की बूंदों को
मोती सा चमकता देखकर ,
आसमान की नीली चादर को पकड़ बादल,
गुहार लगाएं बरखा रानी को ।

तीसरी बानगी

बुद्ध बनाना आसान नहीं, यह पथ पथरीला है,
वो घूंट एक भरना होगा, जो जहर बहुत जहरीला है।

इस बार महिला का गोष्ठी विशेषांक की पुरस्कृत कविता जबल पुर की उमा मिश्रा की 'कर ईश्वर की भक्ति मन' है। विशेषांक को पढ़िए और बताइए की अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरूर दीजिएगा।

अंत में

भोर रात दिनमान चक्र है ,
इसी में जगभर घूमा है ।
का है अपना का है पराया ,
यही तो जग की माया है ।

उमेश श्रीवास्तव

❖ कविताएं

चिंता की बात

चिंता की बात है भाई चिंता की
बढ़ती गर्मी, घटता जल
परेशान हैं सब मानव और वैज्ञानिक।

खाड़ी में हो रहा युद्ध, पेट्रोल डीजल के दाम बढ़े।
रसोई गैस की हुई समस्या खड़ी, खाना बनाने के लिए फिर से जले चूल्हा घर-घर।

सब कहते यह सब हो रहा ग्लोबल वार्मिंग,
प्रकृति दे रही वार्निंग है।
फसलों का करता नुस्कान यह पत्थर पानी,
चारों ओर फिर भी कमी है पानी।

चांद और मंगल अंतरिक्ष की चिंता में लगे,
अन्य ग्रहों पर बसने की है तैयारी अपनी धरा को भूलने लगे।
नई समस्याएं, नया समाधान है।

मानव एक दूसरे पर दोष डाल रहे,
अभी नहीं तो कब जागोगे?
चिंता की बात है भाई चिंता की बात।

उमा मिश्रा प्रीति

संकट आया तेल पर

फिर से आया समय कठिन, तेल का बढ़ा है दाम,
हर घर में अब चर्चा है, कैसे चलेगा काम।

टंकी खाली गाड़ियों की, सड़कों पर रुकते पाँव,
हर कोई अब सोच रहा, कैसे चलेगा गाँव।

चूल्हे की आग भी अब तो, मद्धम सी पड़ने लगी,
रसोई की हर रौनक भी,
जैसे कुछ कम लगने लगी।

दुकानों की रौनक सूनी, बाजार उदास सा है,
महंगाई की मार में हर, इंसान परेशान सा है।

पर उम्मीद की किरण अभी भी, दिल में जगी हुई है,
नई ऊर्जा के रास्ते पर, दुनिया लगी हुई है।

सूरज, हवा और बिजली से, हल निकलेगा नया,
संकट चाहे जैसा भी हो, टूटेगा ना हौसला।

सुनीता गुप्ता
कानपुर

तेल का संकटः आज की चेतावनी

कल का सूरज तभी खिलेगा,
जब आज का तेल बचेगा।'
धरा के गर्भ से निकला जो,
काला सोना कहलाता है,
आज वही अनमोल रत्न, संकट में नज़र आता है।

पहिए जिससे चलते थे,
और जगमग था सारा संसार,
उसी तेल की बूंद-बूंद को,
अब तरस रहा है व्यापार।

इंसान की अंधी दौड़ ने, कुदरत को खूब निचोड़ा है,
आने वाली नस्लों के हित, कुछ भी नहीं छोड़ा है।
मशीनों के इस जंगल में, हम इतने खो गए गहरे,
भूल गए कि सीमित हैं, ये धरती के कोष सुनहरे।

कहीं युद्ध की आग लगी,
कहीं राजनीति का खेल है,
बढ़ती कीमतों की मार से,
अब आम आदमी बेमेल है।

धुआं उगलती सड़कों पर, सांसें अब भारी हैं,
तेल का ये संकट भाई, सबकी ज़िम्मेदारी है।

अभी वक्त है संभल जाएं, सूरज की शक्ति अपनाएं,
पवन की गति और जल की धारा,
संग नई राहें बनाएं।

साइकिल को दोस्त बनाएं, या बस का हाथ थामें,
व्यर्थ न बहाएं तेल कहीं, बस यही शपथ हम मानें।

अगर आज न जागे हम, तो कल अंधियारा छाएगा,
बिना तेल के ये आधुनिक युग,
मिट्टी में मिल जाएगा।

बचत ही बस विकल्प है, समझो वक्त की पुकार,
संसाधन बचाओ आज, तभी सुधरेगा संसार।

प्रभजोत कौर जोत, मोहाली

गर्म हुई हवाएँ

कभी चले गर्म हवा, कभी चले कम हवा।
अग्नि सी लगती हवा, देख कर सभी दंग।।

पेड़ पौधे झुलसे हैं, नदी तालाब सूखे हैं।
जीव -जंतु भी प्यासे हैं, जीने का गलत ढंग।।

❖ पुरस्कृत कविता

कर ईश्वर की भक्ति मन

कर ईश्वर की भक्ति मन,
प्रभु है बड़े उदार।
राग -द्वेष का अंत कर, हुआ धर्म संचार।।

मेरे आँगन आ बसों, करती वंदन आज।
सच्चे उर से साधना, कृपा करो बौछार।।

हनुमंत प्रभो जप सदा, होगी इच्छा पूर्ण।
धीर-धरे मन सादगी, मानस जन आधार।।

अष्ट सिद्धि नव निधि मिली,
राम हृदय तुम प्राण।
रूद्र रूप अवतार प्रभु, हरते सकल विकार।।

नित दानव बढ़ते रहे, बढ़ने लगा अधर्म।
सत की रक्षा हो सदा,
नित आत्मिक संसार।।

उमा मिश्रा 'प्रीति'
(जबलपुर)

❖ कविताएं

गर्म हवा जोरों चले, नील गगन के तले।
आग सी लपटे चलें, करे मानव को तंग।।

डाली- डाली सूख गई, कलियाँ मुरझा गईं।
तितलियाँ भी सो गईं, खो गई सभी उमंग।।

सुषमा सिंह उर्मि

गर्मी की दस्तक

धीरे-धीरे आँगन में धूप ने, अपने पाँव पसारे हैं,
गर्मी की दस्तक है देखो, बदले अब नज़ारे हैं।

पलाशों ने रंग बिखेरे, पेड़ों पर अंकुर सज आए
कोयल की मधुर पुकारों ने, मौसम गीत है गाये ।

नदियाँ भी है शांत शांत, जल है मानो थकान लिए,
धरती तपन से डरी-डरी, सूरज है अहंकार लिए।

छाँव ढूँढते पथिक चले, प्यासे अधरों पर प्यास भरें,
पवन ने भी गर्म तेज लेकर, सूरज का साथ दे रहें।

पर इस तपन में भी जीवन, कई नई उमंगें लाता है,
गर्मी की ये दस्तक देखो, बदलाव संदेश सुनाता है।

गर्मी के दिनों की खुशियां, हम सबको खूब भाती है
लीची, आम, शहतूत,जामुन हमें खूब लुभाती है।

मौसम हमें संदेश देता, हर दिन होत न एक समान,
गर्मी, ठंडी, पतझड़ और कभी मिले सुंदर बरसात।

सुनीता मिश्रा
देहरादून

मौसम ने ली अंगड़ाई

मौसम ने ली अंगड़ाई।
वसंत ऋतु की हो गई विदाई।
रामा दुहाई हाय हाय री ये गर्मी आई।
एसी कूलर चालू हो गए
धोकर रख दिए कंबल रजाई।
परेशानियां कभी खत्म होती ही नहीं।
पहले ही क्या कम थी महंगाई।
कब तक झेलेंगे हम क्या क्या कठिनाई।
युद्ध से क्षति ही होती है
कितनी हानि होती है होती क्या है भलाई।
कैसे विश्व में हो शांति
अमन चैन सब खोता जा रहा
कब तक जारी रहेगी लड़ाई।
मौसम ने ली अंगड़ाई।
तपती दोपहर में पथिक को
वृक्ष की शीतल छाया लगती है सुखदाई।
मौसम ने ली अंगड़ाई।
परिवर्तन ही जीवन है
प्रकृति का परिवर्तन सिखाती हमको
जीवन की वास्तविकता
जीवन की सच्चाई।

रेणुका पटेल
भिलाई छत्तीसगढ़

गर्मी की दस्तक

गर्मी के शुरुआत की दस्तक लेकर
लो आ गया अप्रैल का महीना,
गर्म हवाएं सता रही हर किसी को
टप टप बरसे हर किसी का पसीना...,

अब तो बस गर्मी की शुरुआत यही है
और सुबहो-शाम फिर भी है राहत,
पर दोपहर को गरम धूप है सताती
उस वक्त फिर गर्मी से कहां है राहत...,

छांव देते दरख्तों को मानव ने काटा
जो धूप से सड़कों को ठंडक से थे भरते,
सताती है अब राहगीरों को है गर्मी
उनकी गलती उन्हें सताती क्या करते...,

प्रकृति का दोहन अभी भी जो करता
अभी ना माने जाने आगे कब सुधरेगा,
प्रकृति तो कुछ नहीं कहेगी चुपचाप सहेगी
पर समय अपने समय पर हिसाब जरूर लेगा...।

शुभा भौमिक
बिलासपुर (छ.ग.)

गर्म हवाएं

गर्मी में पसीने की बूंदों को
मोती सा चमकता देखकर ,
आसमान की नीली चादर को पकड़ बादल,
गुहार लगाएं बरखा रानी को ।
खेत खलिहान जो मांग रहे पानी ,
बछड़े भी घास को तरस रहें ,
झरने प्यासे सूख रहे हैं ।

जिन बादलों को देख किसान को--
अपने बीजों के फूटने की उम्मीद जागती ।
बरसात के मौसम की पहचान बनाते ,
सकुचाकर चलते जब ये बादल ,
छाये और बिन बरसे ही धोखा दे जाए ,
भरोसा टूट जाने से बादलों के ,
बरसने की आस पूरी न हुई ।

उन हांफते बादलों की ओर देख ,
किसान को अपने श्रम कणों से ,
बगिया में लगाए बीजों के पल्लवित हो ,
अपनी आस के पूरा होने का इंतजार है ।।

सरिता कपूर ,
गाजियाबाद

मौसम ले अंगड़ाई

हाड़ कंपाने वाली ठंड को दूर भगाई,
ग्रीष्म ऋतु शनैः शनैः है आई।

मौसम ले रहा धीरे-धीरे अंगड़ाई,
सूर्य देव जी के काम के घंटे है बढ़ाई।

जैसे जैसे सूर्य देव जी के क्रोध बढ़त जाई,
प्याज के छिलके समान वस्त्र कम होत जाई,

पेड़, पौधे और धरा सूखत जाई,
ताल- तलैया,पोखर,नदी सूखत जाई।

ऊनी वस्त्र, कम्बल और रजाई ,
धो कर धूप दिखा बड़े बॉक्स की शोभा बढ़ाई।

बिगड़े पंखा,कूलर, एसी जल्दी ठीक कराई,
बिजली मिस्त्री की सब लोग बढ़ा दो कमाई।

गर्म पेय पदार्थों को कमतर करो भाई/
या से क्षमा मांग लो भाई,
देशी शीतल पेय पदार्थों का नित सेवन करो भाई।

गर्म हवा, लू के थपेड़ों की जब मार पड़े भाई,
हर किसी के पसीना टप टप बरसत जाई।

लौकी, कद्दू, नेनुआ, तरोई खूब खाओ भाई,
शरीर में जल की मात्रा खूब बढ़ाओ भाई।

खूब पढ़ लिख मेहनत से परीक्षाएं दो भाई,
तत्पश्चात छुट्टियों में खूब मनोरंजन,मौज मस्ती करो भाई।

घर के आसपास व सड़क किनारे खूब फलदार वृक्षारोपण करो भाई,
शीतल छाया उपलब्ध करा राहगीरों की राह सरल बनाओ भाई।

केवल बिजली पर ही निर्भर न रहो भाई,
हाथ के पंखे के साथ ही
छत पर प्राकृतिक हवा का आनंद लो भाई/ या
बराबर पवन देव जी का आशीर्वाद प्राप्त करते चलो भाई।

साधना खरे
प्रयागराज

संकट आया तेल पर

हुई लड़ाई आफत आई।
दुःख होता है खेल पर।
ईधन लकड़ी खत्म हो गई।
संकट आया तेल पर।

गैस रसोई हुई कीमती।
लाईन लगी कतारों में।
खड़ी दुपहरी खाक हो रहें।
शर्तें लगी है मेल पर।

खाड़ी देश ने करी तबाही।
जल डमरू नाका बंद किया।
कच्चे तेल में बंदिश आयीं।
खतरा बढ़ गया तेल पर।
उफ़। संकट आया तेल पर।

संतोष मिश्रा दामिनी
प्रयागराज

गर्मी की दस्तक

फाग महीना बीता चैत्र महीने ने दी दस्तक ,
सुहाना मौसम बीत गया अब आई गर्मी की दस्तक त

ग्लोबल वार्मिंग की वज़ह से मौसम न समझ आता ,
कभी धूप तो कभी छांव, पानी भी बरस जाता त

फसल के लिए है नही अच्छा , किसान भी हैं परेशान ,
खाने की चीजों के दाम बढ़कर परेशान हैं आम इंसान त

मौसम के बदलते परिवेश से सब बदल जाता ,
मोटे वस्त्र की जगह कॉटन वस्त्र जगह बना लेता त

मौसम के अंगड़ाई लेते रखो अपना ध्यान ,
पेय पदार्थ ग्रहण कर स्फूर्ति लाओ तन मन में त

प्रकृति भी सोच रहीं क्या? हो रहा मेरे साथ ,
जन जन खिलवाड़ कर रहे , कर रहे
हमें आघात ।

कहे हंसा वृक्षों की कीमत को पहचानो ,
अपनी धरा का रख मान , पेड़ पौधों को उपजाओ त

हर मौसम रखेंगे ताल मेल , करेंगे खुशहाल ,
जीवन होगा सभी का उत्तम, न होंगे
बदहाल ।

डॉ.योगिता सिंह हंसा'
कानपुर

मौसम ले अँगड़ाई

मौसम का गीत बुनूँ जब, राहत मिलती हरजाई,
बेगाना सा लगता है, जब मौसम ले अँगड़ाई।

कभी गर्मी ठंडक देती, दुश्वार कभी है जीना,
जब ठिठुरन याद करुँ तो, श्रृंगार का लगे महीना।
रिमझिम बारिश की बूँदे, सिहरन से तनिक लजाई,
बेगाना - सा लगता है, जब मौसम ले अँगड़ाई।।

मौसम का जादू ऐसा, जो मन में प्यार जगा दे,
रंग बदले है ये पल-पल, न मालूम कहाँ दगा दे।
आई मतवाली पुरवा, संग आँधी तूफाँ लाई,
बेगाना - सा लगता है, जब मौसम ले अँगड़ाई।।

ये कहाँ - कहाँ से होकर, लाती मंजिल अनजानी,
मुझको बरसात बना लो, मैं रिमझिम की दीवानी।
करें तेरी सभी प्रतीक्षा, तुझसे गरमी नरमाई,
बेगाना - सा लगता है, जब मौसम ले अँगड़ाई।।

डॉ0(कु0)शशि जायसवाल
प्रयागराज,

हनुमान जयन्ती

वीर विक्रम वङ्का देह धैर्य धाम अंजनी नंदन।
भक्ति भाव के आदि स्रोत रघुपति सेवक शुभनन्दन।
अज्ञान तम हरने वाले ज्ञान दीप प्रखर प्रजल्लित।
संकट मोचन बल प्रदाता पवन पुत्र जग में विख्यात।।

कपि शिरोमणि तेज पुंज त्रिलोक्य विजयी दींन दयाल।
अचल भक्ति के आदर्श तुम हो मर्यादा के रखवाल ।।

लंक दहन दुष्ट नाशक धर्म ध्वज के तुम आधार।
राम काम मे लीन सदा तुम से सुशोभित सारा संसार।
गिरी सम बल सागर सी बुद्धि वचन विवेक अतुलित ज्ञान।
विपद विनाशक कृपा सिंधु हरते जन मन का सन्ताप।।
तुमसे ही निर्भय जीवन है तुम से ही विश्वास अटल।
जय जय वीर हनुमान।।

अफ़रोज़ अज़ीज़
दिल्ली इकाई।

रंगीली छबीली रसीली राधा गोरी।

रंगीली छबीली रसीली राधा गोरी।
मधुबन में मिलने आई
मनमोहन से चोरी चोरी।

देख राधा को अति आनंदित्व
हो रहे हैं श्याम।
रटते है दीन रात वो तो
राधा राधा नाम।
इक नंद का छोरा
दूजी वृषभानु की किशोरी।
कृष्ण की रसभरी बातें सुन
राधा हो रही हैं मगन।
प्रिया प्रियतम के मन से मन का
आज हो रहा है मधुर मिलन।
नेह का नाता जन्मजन्मांतर का
दोनों बंधे प्रीत की डोरी।

धीरे धीरे सब सयानी सखियां आई
दृश्य मनोहर देख मुसकाई।
निक लागे अति श्यामा श्याम जोड़ी

रेणुका पटेल
भिलाई छत्तीसगढ़

खराब कौन

एक चेहरे पर कई चेहरे लगा लेते हैं इंसान,
फिर कहते फिरते हैं ज़माना खराब है।

दिल-दिमाग और चेहरे की धूल साफ करते नहीं है इंसान,
फिर कहते फिरते हैं आइना खराब है।

दिल-दिमाग में नीयत बुरी रखतें हैं इंसान,
फिर कहते फिरते हैं दुनियां बेईमान है।

समयानुसार रंगत/फितरत बदलते रहते हैं इंसान,
रंग बदलने में गिरगिटान को माहिर कहते इंसान हैं।

रुख/मुख जिस वक्त उतर जाता है नकाब,
उसे बुरा बोलते वे भी जिसकी छलनी में छेदों हजार हैं।

समस्याओं से भागते -भागते उनका लगाते जाते हैं अम्बार,
पास में है परछाई(समाधान)
किंतु पहचान पाते नहीं इंसान हैं।

खुद में भी बुरी वृत्ति लिए फिरते हैं इंसान,
विषम लिंगी को बदनाम करते फिरते इंसान हैं।

एक दूजे की कमजोर नब्ज़ टटोलते हैं इंसान,
फिर कहते फिरते हैं दुश्मन फलां इंसान हैं।

चित्रों और मूर्तियों में भगवान मानते हैं इंसान,
इंसान को बस इंसान समझना चाहते नहीं जनाब है।

सुख के क्षणों में चित्रों और मूर्तियों में
दिखते भगवान ही भगवान,
दुख के क्षणों में भगवान को पत्थर मानते इंसान हैं।

पर प्राणी के दुख में जो पिघलते नहीं है इंसान,
वे ही कहते फिरते हैं बड़ा कठोर पाषाण है।

साधना खरे
प्रयागराज

जय जय हनुमान

तुम शुभ मंगल को जन्मे हो
करते हो सबके मंगल काम
बिगड़े कारज संवर जाते हैं
यदि ले लो पवन सुत नाम।।

विद्या, बल ,बुद्धि में अग्रणी
भक्तिभाव में सर्वश्रेष्ठ कहाते
पवन वेग से जब उड़ते तो
डर जाते आकाश, भू थाम।।

राम सिया निज हृदय संजोये
खुद राम के चरणों में विराजे
कलयुग में तुम बजरंगी पुजते
चरणों में करते भक्त प्रणाम।।

हनुमान बिना राम कथा अधूरी
सुंदरकांड हनुमत महिमा पूरी
राम- लखन को कांधे बिठाया
ऐसे भक्त हनुमान को प्रणाम ।।
सीता को माँ कह के पुकारा
राम-संदेश सीता को बताया
दिखा मुद्रिका किया प्रणाम
पवनसुत करते तुम्हें प्रणाम ।।

अपने भक्तों की रक्षा करते
हनुमान बिना राम न पुजते
रामकथा हनुमत बिन अपूर्ण
करते हम हनुमान को प्रणाम ।।

❖ कविताएं

जो सुंदरकांड का पाठ करते
उसके बिगड़े कारज संवरते
बजरंगी सब बाधा दूर हटाते
विघ्नहर्ता हनुमान को प्रणाम।।

आशा जाकड़

नर्मदा तट पर राम

नर्मदा के निर्मल तट पर
शीतल बहती धारा
वनवासी बन राम चले थे।
संग लिए उजियारा।

वन की छाया
पर्वत की माया
संग लक्ष्मण सीता
हर कण में था भाव भक्ति का,
हर क्षण था संगीत सा।

रेवा माँ की गोद में जैसे
शांति ने घर पाया

राम नाम की गूंज से सारा
वन जगमग हो आया।
नर्मदा बोली मंद स्वर में–
'प्रभु! चरणों का स्पर्श मिले'
राम मुस्काए करुणा भरकर–
'माँ! तेरा यश अमर रहे।'
जल तरंगों में झलके जैसे
प्रभु का दिव्य प्रकाश
नर्मदा भी धन्य हुई उस
पावन मिलन के पास।
आज भी बहती रेवा गाती
राम कथा की तान,
हर लहर में बसते हैं जैसे
श्रीराम के गुणगान!!

अनीता दुबे
जबलपुर (मध्य प्रदेश)

सरस्वती वंदना

कमलासनी आकर विराजें
हर कली ये कह रही ।
पुष्प पुष्पित पल्लवित हो
पवन पावन बह रही ।।

शुभ्र ज्योतित वेद दात्री
ज्ञान मातु प्रदायनी ।
भक्त वत्सल, सप्त सुरमय
आप शुभ वरदायनी ।।

हंस वाहन शोभते माँ
शारदे भव तार दे।
काज ऐसे नित करूँ माँ
ज्ञान का नव सार दे ।।

दिव्य पोषित दृष्टि पाऊँ
अर्चना नित आपकी ।
भाव पुष्पों के समर्पित
वंदना नित आपकी ।।

छाया सक्सेना 'प्रभु '
जबलपुर (म.प्र.)

जय हनुमान

चैत्र मास की पूर्णिमा दिन रहा मंगलवार ,
पवन-अंजनि सुत हनुमान ने लिया रुद्रवतार ।

सियाराम हिय में लिए, पूरे करते सबके बिगड़े काम,
ऐसे प्यारे हनुमान को मेरा बारम्बार प्रणाम।

दुःख-संताप ,भय के तुम हर्ता, करते नहीं निराश,
कार्य सफल करें निज भक्त के करते विपदा का नाश ।

चूर-चूर कर दशानन के दंभ को लंका में आग लगाई,
लेकर सियाजी की कुशल क्षेम अपने श्रीराम को जा सुनाई
।

श्रीराम की अंतर्मन पीर को दूर करने वे धाये ,
लक्ष्मण के प्राणदाता बन
जड़ी बूटियों का पहाड़ ही ले आए ।

जो कहते थे अभी हवा में बड़ी तपन है ,
वे कहने लगे , सुगंधित सुखद पवन हैं ।

रामभक्ति की अति का मांगें उनसे प्रमाण,
हृदय खोलकर दिखा दिया दिल में बसे मेरे श्रीराम।
हे अमर विनम्र धारक सुनो प्रार्थना हमारी ,
अर्पण खुद को कर दिया द्वार खड़ी हूं तिहारी ।

कष्ट हर,आशीष दें,मन में बस यही है चाह ,
जीवन के हर मोड़ पर सुगम करें हमारी राह ।

सज्जनों का साथ देते दुर्जन होवें भयभीत,
निज इच्छा हिय की जानकर हर रूप में हनुमत मीत ।

सरिता कपूर

स्त्री

क्यों हर पग पग पर एक स्त्री त्याग करती है,
मां बाप की सूरत देख के क्यूं हर बेटी समझौता करती है।
कभी पति की ख्वाहिशों के आगे अपनी ख्वाहिशें कुर्बान करती है,
कोई उसको समझ न पाता है
वो खुद से समझौता करती है।
कभी बच्चों की ज़िम्मेदारियों तले
खुद को वो मिटा भी लेती है,
अपने अस्तित्व को खो कर के
एक मां फिर सुकून से जीती है।
फर्ज के नाम पे ना जाने कितने ही आंसू पीती है,
गम में भी मुस्का लेती है हर दर्द छिपा वो लेती है।
पर ज़रा कभी चुपके से वो जो खुद के बारे में सोच भी ले,
एक किरकिरी सी बन के सबके फिर आंखों में वो चुभा करती है।

श्रद्धा श्रीवास्तव,
कानपुर

बोधिसत्व

बुद्ध बनाना आसान नहीं, यह पथ पथरीला है,
वो घूंट एक भरना होगा, जो जहर बहुत जहरीला है।

बाहर की दुनिया जीतना, बहुतेरों को आता है,
भीतर के द्वंद्व को जीते जो, वही बुद्ध कहलाता है।

महल छोड़कर वन जाना, तो एक पहली सीढ़ी है,
मोह माया के जाल को तोड़ना होगा, सबसे बड़ी जो बेड़ी है।

न कोई शत्रु, न कोई मित्र, परोपकार है इसका सार,
कठिन है यह साधना, त्यागना पड़ता है संसार।

आसान नहीं है बुद्ध होना, यह तो अग्नि का है खेल,
जहाँ जलकर ही होता है, देह और आत्मा का मेल।

जो खुद को तपाकर सोना बने, वही बुद्ध कहलाता है,
यह पथ कांटों भरा है फिर भी, मानवता की रह दिखाता है।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

युद्ध/ बुद्ध

हे हतभाग, रख अनुराग, हरपल हो सबसे।
तू अब जाग, दें प्रतिभाग, देखे है कबसे।।
नित जीवन न, माने हार, ये अपने मन से।
करले स्नेह, निःसंदेह, प्यारे जीवन से।।

चारों ओर, अंतस शोर, सुपथ हृदय सपना।
चेतन प्राण, प्रिय जन त्राण, कौन यहाँ अपना।।
बजता नाद, जीवन निंदा, आज करें घट में।
अर्चन पूज, प्रभु को जान, कण-कण जीवन में।।

मानव आज, है नाराज, रोते घर-घर में।
है अभिशाप, बढ़ता ताप, है पीर डगर में।।
बोझिल भार, बंजर भूमि, विलख रही धरती।
प्राणी दुष्ट, धरती रूष्ट, मानवता डरती।।

हे प्रभु राम, यह इंसान, भूल गया ममता।
करता युद्ध , निर्बल बुद्ध, कहाँ हुई समता।।
मेरे राम, राधेश्याम, कैसी यह दुनियाँ।
जो निर्दोष, पर हो रोष, देख दुखी मुनियाँ।।

उमा मिश्रा 'प्रीति '

कोई अरमान मेरे दिल का निकलने ना दिया

कोई अरमान मेरे दिल का निकलने ना दिया।
साथ चाहा कभी साथ भी चलने ना दिया।।

आज भी आस लगाए हैं वफ़ा की उनसे।
दिल से उम्मीद का सूरज कभी ढलने ना दिया।।

हाय ये जुर्म ये मोहब्बत में क़ज़ा से पहले।
अपने बीमार को पहलू भी बदलने ना दिया।।

हम अंधेरों की अना तोड़ के रख देते मगर
इन हवाओं ने चरागों को भी जलने ना दिया।।

वार हर सम्त से इस तरह किये ज़ालिम ने
मेरे तरकश का कोई तीर निकलने ना दिया।।

काम आया है मेरे सब्र का सागर लोगों।
जिसने ऑसू मेरी आंखों से निकलने ना दिया।।

ज़िन्दगी भर तो सम्भलते रहे गिर गिर के अज़ीज़।
उसने नज़रों से गिराया तो सम्भलने ना दिया।।

अफ़रोज़ अज़ीज़

मैंने रब को सदा अपने भीतर पाया

मैंने रब को सदा अपने भीतर पाया
मंदिर मस्जिद ढूंढने गई ही नहीं

जब से मिली हो तुम
मेरी रूह कहीं और भटकी ही नहीं

तेरे प्यार में ये जाना है अब
कि बिन तेरे ये जिंदगी, जिंदगी ही नहीं

तेरा नाम , तेरा अक्स रहता है
हर दम निगाहों में
अब ये नज़र किसी और को देखती ही नहीं

तू रहना वयस्त अपने कामों में कोई शिकवा नहीं
पर सांसें तेरे बिन चलना चलती ही नहीं

तू नाराज़ रह या राजी रह मुझसे
दिल ने तो प्यार कम करना ही नहीं।

प्रभजोत कौर जोत,
मोहाली

अभिलाषा

उम्मीद के अंकुर नव आशा बोती ।
अभिलाषा मन की परिभाषा होती ।।

जब कली खिलेगी बागों में प्यारी ।
तब दुखी न होगी कोई भी नारी ।।
मुश्किल कितनी भी आएँ और जाएँ
पर कदम बढ़े जो रुकने न पाएँ ।।
कब मौन अधर की मृदु भाषा मोती ।
अभिलाषा मन की परिभाषा होती ।।

हर शिखर सफलता चढ़ती ही जाती ।
हर गीत खुशी के अपनों संग गाती ।।
नारी सृष्टि की अनुपम सी गाथा ।
हिंदी की बिंदी से शोभित माथा ।।
मूल्यों की माला वो सदा पिरोती ।
अभिलाषा मन की परिभाषा होती ।।

छाया सक्सेना प्रभु
जबलपुर (म.प्र.)

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ टष्ठई सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धम्तरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

हिंदी साप्ताहिक शहर समता

❖ गद्य

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

रामधारी सिंह दिनकर आधुनिक हिंदी काव्यधारा के उन अद्वितीय सर्जक हैं, जिनकी काव्यवाणी में राष्ट्रभावना का तेजस्वी और ओजपूर्ण आलोक सर्वत्र विद्यमान है। उनका साहित्य केवल रसास्वादन का माध्यम नहीं, अपितु जनमानस में आत्मगौरव, स्वाधीनता-बोध और कर्तव्यनिष्ठा का जागरण करने वाला एक सशक्त साधन है। इसी कारण उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में आदरपूर्वक स्मरण किया जाता है।

दिनकर की रचनाशक्ति उस संक्रमणकाल में विकसित हुई, जब समूचा राष्ट्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाल ा में दहक रहा था। पराधीनता की पीड़ा, दमन के विरुद्ध उभरता प्रतिरोध और स्वतंत्रता की तीव्र लालसा–ये सभी भाव उनके काव्य में प्राणतत्त्व के रूप में संचारित हैं। उनकी वाणी में कहीं हुंकार है, कहीं चेतावनी, तो कहीं आत्मसम्मान की तीव्र पुकार; जो शिथिल समाज को जाग्रत करने की क्षमता रखती है।

उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ–हुंकार, रश्मिरथी तथा कुरुक्षेत्र–राष्ट्रीय चेतना के विविध आयामों को सशक्त रूप से उद्घाटित करती हैं। 'हुंकार' में क्रांति का ज्वलंत स्वर है, जो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान करता है। 'रश्मिरथी' में कर्ण के चरित्र के माध्यम से स्वाभिमान, दानशीलता और कर्तव्यपरायणता का उच्च आदर्श प्रस्तुत किया गया है। वहीं 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध और शांति के द्वंद्व के माध्यम से राष्ट्रधर्म, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का गंभीर विवेचन मिलता है।

दिनकर की भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी प्रवाहमयी, प्रभावसंपन्न तथा ऊर्जस्वित है। उनके काव्य में वीर रस की प्रधानता है, जो पाठक के अंतःकरण में उत्साह, साहस और राष्ट्रनिष्ठा का संचार करती है। वे केवल कवि नहीं, अपितु युगद्रष्टा चिंतक थे, जिन्होंने अपने शब्दों से समाज को दिशा प्रदान की।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना एक जीवंत शक्ति के रूप में विद्यमान है, जो प्रत्येक युग में प्रासंगिक बनी रहती है। उनका साहित्य आज भी हमें अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण, उत्तरदायित्व और त्याग की भावना से अनुप्राणित करता

अफ़रोज़ अज़ीज़
दिल्ली

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी नवाचार

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974) आधुनिक हिंदी साहित्य में वीर रस, राष्ट्रवाद और ओजस्वी चेतना के प्रमुख स्तंभ हैं, जिन्हें 'राष्ट्रकवि' व 'युग-चारण' कहा जाता है।

रामधारी जी ने छायावादोत्तर काल में विद्रोह और क्रांति की भाषा के कवि थे।

'रश्मिरथी' व 'कुरुक्षेत्र'की रचना की।

दिनकर जी के हिंदी नवाचार और योगदानः

वीर रस का पुनर्जागरणः

रामधारी जी ने हिंदी कविता में ओज, विद्रोह और राष्ट्रीय चेतना को पुनर्जीवित किया। स्वतंत्रता से पूर्व विद्रोही कवि के रूप में उन्होंने जनता में राष्ट्रवाद का संचार किया।

ऐतिहासिक प्रतीकों का आधुनिक प्रयोगः 'कुरुक्षेत्र' में महाभारत के प्रसंगों के माध्यम से युद्ध और शांति का दर्शन प्रस्तुत किया, वहीं 'रश्मिरथी' में कर्ण के चरित्र के द्वारा सामाजिक न्याय व संघर्ष को यथार्थ चित्रण का रेखा चित्र खींचा।

काव्य और गद्य में ओजः उनकी भाषा प्रवाहमय, सीधी और गहरी भावनाएँ जगाने वाली थी।

रामधारी सिंह दिनकर जी ने वीर रस की कविता के साथ-साथ गहन दार्शनिक निबंध भी लिखे।

प्रमुख नवाचारी रचनाएँः

कुरुक्षेत्र (1946): युद्ध और शांति की समस्या पर एक आधुनिक महाकाव्य।

रश्मिरथी (1952): कर्ण के जीवन संघर्ष पर आधारित।

उर्वशी (1961): प्रेम और दर्शन पर आधारित काव्य, जिसके लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

हुंकार (1938): विद्रोही स्वर वाली रचना।

पुरस्कारः उन्हें साहित्य अकादमी (1959) और ज्ञानपीठ (1972) पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

दिनकर जी की कविता जनता को जागृत करने वाल ी इसीलिए उन्हें राष्ट्रीय कवि कहा जाता है।

उमा मिश्रा 'प्रीति'

'रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना'

दिनकर जी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का पुट स्पष्ट रूप से झलकता है। चाहे वो, 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है', या कहें , 'हाहाकार,' या, 'जीना हो तो मरने से ना डरो रे', या फिर 'हुंकार',आदि और भी कविताएं हैं जो जीवन दर्शन और राष्ट्रीय चेतना को दर्शाती है। उनकी कविताओं को पढ़कर मन में एक उत्साह और ओज सा जाग जाता है, और दिल उमंगों से भर जाता है। आत्म सम्मान से भरी हुई उनकी कविता सभी दिलों को काफी उत्साहित कर देती हैं । उनकी लिखी कविताएं जन-जन में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने के लिए काफी हैं,एक बार उन्हें पढ़ लें बस।

जनता के दिलों में उनकी ओजपूर्ण कविताओं की वजह से विद्रोह और जागरण कूट-कूट कर भर जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के उस काल में विद्रोह से भरी हुई उनकी कविताएं जन-जन में दिलों को जागृत किया, इसी वजह से उनको राष्ट्रीय कवि का स्थान मिला। उनकी कविता हुंकार की वजह से उनको साहित्य अकादमी और ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता से पूर्व जब समूचा राष्ट्र पराधीनता की पीड़ा से जकड़ा हुआ था, उस वक्त दमन के विरुद्ध स्वतंत्रता की चाहत लिए उनकी कविताएं वीर रस से भरी, ओजपूर्ण और राष्ट्रीय जागरण का भाव लिए, जन जन में विद्रोह की भावना को जागृत करतीं गईं और एक प्रकार से सभी दिलों को आशाओं से भर दिया।

उनकी कविताओं की भाषा प्रवाहमयी, ओजपूर्ण और वीर रस से भरी हुई हैं , जो सभी के दिल ों को झंकृत कर देती है। उनकी लिखी कविताएं उस वक्त जितनी प्रभावशाली थी आज के युग के लिए भी उतनी ही प्रभावशाली हैं, जो दिलों में एक चेतना सी जगा देती है

अंत में यही कहना चाहूंगी की रामधारी सिंह दिनकर जी की कविताएं हमें काफी कुछ सीख कर गईं उनकी कविताएं अंतर्मन को जगा देती हैं। उनको शत-शत वंदन ढ़ेरों ढ़ेरों प्रणाम

शुभा भौमिक
बिलासपुर छ. ग.

रामधारी सिंह दिनकर : राष्ट्रकवि का ओजपूर्ण व्यक्तित्व

हिंदी साहित्य के आकाश में कुछ नक्षत्र ऐसे हैं जिनकी चमक कभी फीकी नहीं पड़ती। रामधारी सिंह दिनकर ऐसे ही एक अमर कवि हैं, जिन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में जाना जाता है। उनकी कविताओं में ओज, वीरता, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक चेतना का अद्भुत संगम मिलता है। दिनकर जी ने अपने शब्दों से न केवल साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के मन में उत्साह और आत्मगौरव भी जगाया।

जीवन परिचय

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। उनका बचपन आर्थिक कठिनाइयों में बीता, किंतु उन्होंने अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने इतिहास, राजनीति और दर्शन का गहन अध्ययन किया, जिसका प्रभाव उनकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई देता है।

दिनकर जी ने प्रारंभ में शिक्षक के रूप में कार्य किया, बाद में वे सरकारी सेवा में भी रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे राज्यसभा के सदस्य बने और हिंदी भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहित्यिक योगदान

दिनकर जी की रचनाएँ मुख्यतः वीर रस और राष्ट्रभावना से ओत-प्रोत हैं। उनकी प्रमुख कृतियों में

रश्मिरथी

कुरुक्षेत्र

उर्वशी

परशुराम की प्रतीक्षा

विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

'रश्मिरथी' में उन्होंने कर्ण के जीवन को अत्यंत मार्मिक और प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत किया है। वहीं 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध और शांति के गहरे दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्त किया गया है। 'उर्वशी' के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ, जो उनके काव्य कौशल का सर्वोच्च प्रमाण है।

काव्य शैली और विशेषताएँ

दिनकर जी की भाषा सरल, सशक्त और प्रभावशाली है। उनकी कविताओं में ओज और तेज का अद्भुत संचार होता है। वे ऐसे कवि थे जिन्होंने शब्दों के माध्यम से जनमानस में क्रांति की भावना उत्पन्न की। उनके काव्य में तीन प्रमुख तत्व देखने को मिलते हैं

1. राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति
2. सामाजिक न्याय और समानता
3. मानवता और नैतिक मूल्यों का समर्थन

उनकी लेखनी में जहाँ एक ओर वीर रस का जोश है, वहीं दूसरी ओर श्रृंगार और करुण रस की कोमलता भी दिखाई देती है।

सम्मान और पुरस्कार

दिनकर जी को उनके उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान के लि ए अनेक सम्मान प्राप्त हुए। उन्हें 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से भी अलंकृत किया। उनके सम्मान में उन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी गई, जो उनके प्रति देश की श्रद्धा का प्रतीक है।

समाज और राष्ट्र पर प्रभाव

रामधारी सिंह दिनकर केवल एक कवि ही नहीं, बल्कि एक विचारक और प्रेरक भी थे। उनकी रचनाएँ आज भी युवाओं को प्रेरणा देती हैं। उन्होंने अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध आवाज उठाई और लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

अंततः कहा जा सकता है कि रामधारी सिंह दिनकर हिंदी साहित्य के ऐसे महान स्तंभ हैं, जिनकी रचनाएँ युगों-युगों तक प्रासंगिक रहेंगी। उनका काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वह समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी सहायक है। उनके शब्द आज भी हमारे भीतर देशभक्ति, साहस और आत्मसम्मान की ज्योति प्रज्वलित करते हैं।

सुनीता गुप्ता
कानपुर

'राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर'

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी साहित्य के ऐसे महान कवि थे जिन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण किया। उनका लेखन केवल भावनात्मक या राष्ट्रवादी नहीं था, बल्कि उसमें नवाचार, वैचारिक गहराई और समय की चुनौतियों को समझने की अद्भुत क्षमता भी थी। बिहार के सपूत रामधारी सिंह दिनकर साहब को उनकी निर्भीक काव्य लेखन और अद्भुत साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें राष्ट्र कवि कहा गया है।

हिंदी नवाचार में दिनकर का योगदान ।

दिनकर जी ने हिंदी साहित्य को नई दिशा देने का कार्य किया। उन्होंने भाषा को सरल, सशक्त और जन-सुल भ बनाया। उनकी रचनाओं में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के साथ-साथ लोकभाषा का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है, जिससे उनकी कविता हर वर्ग तक पहुँची।

विषय-वस्तु में नवीनता

दिनकर ने पारंपरिक विषयों से आगे बढ़कर समकाल ीन मुद्दों को अपने लेखन में स्थान दिया। उनकी कृतियों में राष्ट्रीयता, सामाजिक न्याय, विद्रोह और मानवीय मूल्यों का सशक्त चित्रण मिलता है। रश्मिरथी में उन्होंने कर्ण के चरित्र के माध्यम से सामाजिक विषमता और नैतिक द्वंद्व को आधुनिक दृष्टि से प्रस्तुत किया।

शैली और अभिव्यक्ति में नवाचार

दिनकर जी की शैली ओजपूर्ण, प्रभावशाली और प्रेरणादायक थी। उन्होंने छंद और अलंकारों का प्रयोग करते हुए भी अपनी भाषा को बोझिल नहीं बनने दिया। उनकी कविता में एक ओर वीर रस की प्रबलता है, तो दूसरी ओर करुण और श्रृंगार रस का भी सुंदर संतुलन मिलता है।

आधुनिक चेतना का समावेश

दिनकर जी ने अपने लेखन में आधुनिक युग की चेतना को स्थान दिया। वे केवल अतीत की महिमा का गुणगान नहीं करते, बल्कि वर्तमान समस्याओं पर भी विचार करते हैं। कुरुक्षेत्र में उन्होंने युद्ध और शांति के विषय को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, जो आज भी प्रासंगिक है।

रामधारी सिंह दिनकर का हिंदी नवाचार में योगदान अतुलनीय है। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर समाज परिवर्तन का माध्यम बनाया। उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों को प्रेरित करती हैं और हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयों तक ले जाने का मार्ग दिखाती हैं।

सुनीता मिश्रा
देहरादून

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

रामधारी सिंह दिनकर हिंदी साहित्य के ऐसे महान कवि थे, जिनकी कविताओं में ओज, वीरता और राष्ट्रीय भावना का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में भी सम्मानित किया गया। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जनमानस को जागृत करने वाली प्रेरणाशक्ति के रूप में प्रकट होती है।

दिनकर जी का काव्य उस समय विकसित हुआ जब भारत अंग्रेज़ी शासन के अधीन था। देश में स्वतंत्रता की लहर उठ रही थी और जनता अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही थी। ऐसे समय में दिनकर जी की कविताओं ने लोगों में स्वाभिमान, साहस और देशभक्ति की भावना जगाई। उनकी रचनाएँ युवाओं को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैं।

उनकी प्रसिद्ध कृतियों जैसे हुंकार, रश्मिरथी और कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना का स्पष्ट स्वर सुनाई देता है। 'हुंकार' में उन्होंने दासता के विरुद्ध विद्रोह की ज्वाल ा प्रज्वलित की, वहीं 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध और शांति के माध्यम से नैतिकता और राष्ट्रधर्म का संदेश दिया। 'रश्मिरथी' में कर्ण के माध्यम से उन्होंने सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान की भावना को प्रस्तुत किया, जो राष्ट्रीय चेतना का ही एक महत्वपूर्ण पहलू है।

दिनकर जी के काव्य की विशेषता यह है कि उसमें अतीत के गौरव का स्मरण और वर्तमान की चुनौतियों का समाधान दोनों समाहित हैं। वे भारतीय संस्कृति, परंपरा और मूल्यों को पुनर्जीवित करते हुए राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करते हैं। उनकी भाषा सरल, प्रभावशाली और ओजपूर्ण है, जो सीधे हृदय को स्पर्श करती है।

राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में दिनकर जी केवल स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने सामाजिक समानता, न्याय और एकता को भी राष्ट्र की मजबूती का आधार माना। उनके काव्य में यह संदेश स्पष्ट रूप से मिलता है कि सच्ची राष्ट्रभक्ति केवल देश के लिए मरने में नहीं, बल्कि देश के लिए जीने और उसे समृद्ध बनाने में है।

अंततः कहा जा सकता है कि रामधारी सिंह दिनकर का काव्य भारतीय राष्ट्रीय चेतना का सशक्त दर्पण है। उनकी रचनाएँ आज भी देशभक्ति, आत्मगौरव और नैतिक मूल्यों की प्रेरणा देती हैं तथा आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराती हैं।

अनीता दुबे